अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

अमृतलाल नागर जी के उपन्यासों में नारी चेतना

शोधार्थी - संध्या शर्मा

प्रत्येक शब्द का अपना एक स्वतंत्र इतिहास होता है | एक स्वतंत्र अस्तित्व होता है| नारी चंतन के सन्दर्भ में यदि बात की जाएँ तो हम पाते हैं क नारी प्रकृति रूपा है | नारी को आदिकाल से ही सृष्टि की संचा लका माना जाता है| उसके बिना इस जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती| नारी सदैव की पुरुषों की प्रेरणा रही है | वह पुरुषों को निराशा में आशा देती है, दुःख में सान्तवना देती है और उसके कर्मों को उत्साह से भरने का कार्य करती है| हिंदी की सुप्र सद्ध कवयित्री अना मका जी (नारी को केंद्र बनाकर अपने सृजनात्मक कार्य को करती हैं) के वषय में कहा जाता है क - "वे सर्फ क वता में ही नहीं, बल्कि अपने सम्पूर्ण लेखन में भी नारी की एक उदार सांस्कृतिक प्रवक्ता के रूप में उभरी हैं| उनका स्वर आज की आधुनिक शताब्दी का स्वर बनकर हमारे समक्ष प्रस्तुत होता है जिसकी हलचल में उठते छोटे-छोटे नादान सवाल अपने तमाम रूपों के साथ स्था पत वमर्शों को अस्थिर करते चले जाते हैं|"

अमृतलाल नागर जी हिंदी साहित्य के एक ऐसे रचनाकार हैं जो नारी स्वावलंबन और नारी-पुरुष समानता का समर्थन करते हैं| उन्होंने अपनी रचनाओं में नारी की मुश्किलों, परेशानियों, दहेज़ प्रथा, उसके दुष्परिणाम, ववाह की समस्या, वधवा ववाह, वेश्यावृति आदि समस्याओं को अपने उपन्यासों के माध्यम से प्रस्तुत कया है| नारीकाजी वंत चत्रण उन्होंने कया है तथा नारी वर्ग के संगठित होने में ही इसका समाधान बताया है| नागर जी के उपन्यासों में मानवीय व सामाजिक मूल्यों की सफल अ भव्यक्ति हुई है| इनके उपन्यासों में आधुनिक काल के साहित्य में नारी के अस्तित्व, उसकी सामाजिक महत्ता के प्रति जागृति के प्रबल स्वर मुखरित हुए हैं| इन्होंने परिवर्तित दृष्टिकोणों, सामाजिक परिवेश के बदलते आयामों तथा स्वतंत्रता संग्राम, घर की चाहरदीवारी से बाहर जा कार्य करती स्त्रियों की कर्मठता,

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

गतिशीलता एवं वीरता पूर्ण स क्रयता ने उन्हें प्रेरित कया| उन्होंने समाज के इस अ भन्न महत्वपूर्ण अंग की सामाजिक स्थिति को सुधारने में नारी के अलग-अलग परम्परागत, आधुनिक और अत्याधुनिक रूपों को प्रस्तुत करते हुए नए युग में नारी चेतना के प्रचार-प्रसार को आवाज़ दी है|

समाज में आज भी नारी संबंधी समस्याओं का मूल उसकी आ र्थक पराधीनता है , साथ ही साथ एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था जो पुरुष प्रधान है|जो परिस्थिति चाहे जो भी हो हर स्थिति में नारी शोषण को प्रश्रय देती है| आधुनिक युग में जहाँ औद्यो गक वकास और वैज्ञानिक उन्नतियाँ चरम सीमा पर है , नारी की इस स्थिति का आकलन करते हुए कहते हैं -------"मौजूदा समाज में नारी की एक अजीब सामाजिक स्थितिहै| खासतौर से हमारे देश में तो यह व चत्रता और भी स्पष्ट होकर झलकती है| हम देखते हैं क औरतेंइस समय आम घरों में कसी न कसी रूप में बेइज्जती का जीवन बिताती हैं| छोटे आदमी कहलाने वालों की कौन कहे, बड़े-बड़े सभ्य, रईसों और पं डतों के घरों में भी स्त्री जाति का दमन होता है, तरह-तरह से उसका अपमान होता है | आमजहनियत में स्त्री घर का काम-काज सबकी सेवा-टहल करने वाली और पुरुष के भोग की वास्तु होने के अलावा और कुछ भी नहीं|"

पुरुष वर्ग की स्वार्थी प्रवृति को नागर जी मूल रूप से अ भशप्त जीवन का कारण मानते हैं| नारी मनुष्य समाज का व्य थत अर्द्धांगहै| इनके उपन्यास 'सुहाग के नुपूर ' में नागर जी ने वेश्या और कुलव धु की तुलना के आधार पर दीर्घ काल से यथावत चली आ रही नारी- पीड़ा की सोचनीय दशा को माधवी के माध्यम से व्यक्त कया है|माधवी बल द्वारा नगरवधु बना दी जाने के बाद से भी मन से, वचन से व कर्मों सेसती है | इसी लए उसके नारीत्व का शोषण कए जाने पर मानवीय न्याय के आधार पर वह दृढ़ता, शक्ति एवं साहस के साथ ऊँ परम्पराओं का वरोध करती हुई कहती है- ---"मैं भी न्याय लूँगी| वेश्या बनाने के लए डाकुओं-कुटनियों का जाल फैलाकर जब हमें व्यवसाय की वस्तु बनाया गया तब सामाजिक

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

प्रतिष्ठा का प्रश्न क्यों लुप्त हो जाता है? मैं स्वेच्छा से यहाँ बिककर नहीं आई थी|" मैं भी एक सती हूँ, मेरे सम्मुख भी अपनी मान-मर्यादा और प्रतिष्ठा का प्रश्न है| इस पात्र के माध्यम से नागर जी ने नारी की अस्तित्व की चेतना को उभारा है| परम्परागत व्यवस्थाओं और समस्याओं को क्रांतिकारी चुनौती दी है| एक शो षत नारी के प्रति लेखक की सहानुभूति एवं स्त्री-पुरुष संबंधों में सहजता और समानता की वचारधारा नारी- स्वतंत्रता एवं सामाजिक न्याय के लए आधुनिक चेतना का नेतृत्व करती हैं|

अपने हर युग के यथार्थ को प्रस्तुत करती माधवी का कहना है क ----"पुरुषजाति के स्वार्थ और दंभ भरी मूर्खता से ही सारे पापों का उदय होता है| उसके स्वार्थ के कारण ही उसकीअर्द्धांग नारी जाति पी ड़तहै| एकांगी दृष्टि से सोचने के कारण पुरुष न तो स्त्री को सती बनाकर ही सुखी कर सका और न वेश्या बनाकर ही| इसी कारण वह स्वयं भी झकोले खाता है और खाता रहेगा| नारी के रूप में न्याय रो रहा है| महाक व| उसके आँसुओं में जल भी समाया है और जल प्रलय भी|"

नागर जी ने नारी स्वतंत्रता और जागरूकता का समर्थन करते हुए चले आ रहे परम्परागत भारतीय नारी के सतीत्व, करुणा एवं ममता से परिपूर्ण गौरवमय स्वरुप का भी आदर करते हैं| पुरुष समाज के द्वारा एक शो षत भारतीय सती नारी के रूप में ताड़े के द्रावक अंतर्द्वन्द्व के माध्यम से लेखक ने नारी का यह गौरवशाली पक्ष भी दिखाया है| यथा--- "ताईराधा जी का कन्यादान देना चाहती हैं, यह उनकी बड़ी साध है-----भुवनमोहिनी महामाया का कन्यादान करने से बड़ा पुण्य और क्या हो सकता है? पर राजा साहब ने ताई का पुरस्कार ठुकरा दिया| पति के बिना पत्नी कन्यादान कैसे डे पाएगी,यह ववशता ताई को व्य थत करने लगी ----न आवे निगोड़ा, मेरे कसी कामकाज़ में थोड़े आवेगा| मेरे ही भाग से आज करोड़पति हुआ और राँड निपूती सौत के कहे में आकर मुझे ऐसे-ऐसे सतावे है| मेरी जैसे सती के सराप से----'ताई क्यों भयंकर शाप देते-देते न जाने मन की कस भटक में बंध गई|

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

उनकी आँखों से क्रोध की ज्वाला के बजाए करुणा चू पड़ी; ताई आँखें पोंछते हुए और कामों में लग गई|"

नागर जी के प्र सद्ध उपन्या स'मानस के हंस ' की पात्रा रत्नावली भी भारतीय समाज के उदात्तआदर्शों के प्रतीक के रूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत हुई हैं |वह अपने पति की स्वयं के प्रति आसक्ति देख अपने पति को फटकार लगा सही राह पर लाने का प्रयास करती है| इस प्रयास में अपने पति से दूर रह पाना भी उससे सहन नहीं हो पा ता| पति की सेवा करना उसका सबसे बड़ा धर्म है और पति के प्रति प्रेम उसकी सबसे बड़ी भावना | यथा- "मैं राम जी की सौंह खाती हूँ |तुम्हें कसी प्रकार से लुभाने का प्रयत्न नहीं करुँगी| कहोगे तो तुम्हारे सामने तक नहीं आऊँगी| मुझे केवल अपने पास रहने दो| तुम निकट से अपने राम को निहारा करना और मैं दूर से तुम्हें देखा करुँगी|" अपने सतित्व्रूपी आत्मसम्मान की रक्षा करने के लए कुद सया बेगम जैसी नारियों को आत्महत्या करने के लए भी ववश होना पड़ता है|

जब नारी इस पुरुष समाज द्वारा शो षत और अपमानित होती है तब वह पूर्ण रूप से वद्रोह पर उतर आती है|नागर जी ने अपने उपन्यासों में इसका बखूबी चत्रण कया है| उनके उपन्यास 'बूँद और समुद्र' की नारी चत्रा शो षत होने के कारण पुरुषों से घृणा करती है, घर गृहस्थी से नफरत करती है ले कन इसी के साथ उस पुरुष की अंकशायिनी बन ने को तैयार है----जो उसे खर्चा डे सके| सज्जन द्वारा अपमानित होने पर वह उससे कहती है----"जरा यह बतलाते जाओ क आज की दुनिया में कतनी औरतें सम्मान और स्वा भमान का जीवन बिताती हैं? कतने पुरुष वाकई बराबरी की नजर से हमें देखते हैं?----मैं सदा पत्नी बनना चाहती थी और मेरे दोस्त और शुभ चंतक, मुझे सदा वेश्या बनाते रहें|" इस कथन से उसकी अंतर्वेदना व्यक्त होती है और इसी अंतर्वेदना के प्रतिशोध में वह अपने आ खरी प्रेमी को वष देकर मारने की इच्छा प्रकट करती है|

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

नागर जी ने एक आदर्श नारी की परिकल्पना को अपने उपन्यास 'बूँद और समुद्र ' मेंवनकन्या के रूप में साकार कया है| वन कन्या अपने निम्न मध्यमवर्गीय घर के व्य भचार-पूर्ण वातावरण की प्रति क्रया में उग्र नारी चेतना तथा पुरुष-घृणा लेकर औपन्या सक रंगमंच पर अवतरित होती है| सत्य और न्याय पर दृढ़ रहने तथा अपनी वद्रोही प्रवृति के फलस्वरूप वह अपने घर से अलग रह कर अपने पता के भ्रष्टाचार का अनावरण करती है| वह समाज में एक नारी की असमान स्थिति का घोर रूप से वरोध करती है और नारी के आ र्थक रूप से स्वतंत्र होने पर बल देती है, नारी द्वारा अ धकारों की प्राप्ति के संघर्ष का समाधान वह अलग-अलग शब्दों में देती है| वह कहती हैं "जहाँ आप और आपके पति साथ-साथ कमाने लगेंगे तब इस तरह का स्वामी दासीपन का नाता तो रह ही नहीं जाएगा, दोनों बराबरी से बातचीत करेंगे|" उपन्यासों की पात्र वनकन्या और शीला ऐसी ही नारियाँ हैं जो आ र्थक दृष्टि से स्वावलंबी हैं और युगीन नारी जागरण का जीता-जागता स्वरुप है|समाज की ऐसी नारियाँ ही अपने वर्ग को परम्परागत रुढ़ि रुपी संस्कारों से मुक्त करवा सकती है|

नागर जी एक ऐसे उपन्यासकार थेजो केवल नारी के हितों तक सी मत नहीं रहना चाहते, वे नारी के मानवीय रूप को उभारना चाहती हैं, उसका इस समाजिकता से तालमेल बिठाना चाहते हैं| वह कहते हैं क "मैं यह कभी नहीं कहता क औरतों को आद मयों से लड़ना चाहिए| यह दोनों एक-दूसरे के साथी हैं, अपनी-अपनी अच्छाइयों व बुराइयों के साथ| वह समझाना चाहते हैं क अगर हमार साथ सच्चा है तो हमें एक- दूसरे के लए बर्दाश्त भी करना होगा| गलत बात पर न झुकना व अपने स्वा भमान को कभी ठेस न पहुँचाना हम दोनों के रिश्ते का परम उद्देश्य होना चाहिए| स्त्री यदि चाहे तो वह पुरुषों को अपनी शक्ति के द्वारा हरा सकती है| यह हार जीत ही इन दोनों के रिश्ते में एक समानता बनाएगी | नागर जी इस समाज में नारी को एक महत्वपूर्ण रूप में स्थान देते हैं और चाहते हैं क समाज में पुरुषों के समक्ष एक भू मका के रूप में उसका निर्माण हो सके|